स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा, खण्ड–तीन

कॉमदी

– डॉ. मुन्ना साह

कॉमदी और त्रासदी में प्रमुख अंतर यह है कि कॉमदी का अन्त सुखमय तथा त्रासदी का अंत दुखमय होता है। इसके अलावा कॉमदी में विचित्र और हास्यास्पद स्थितियाँ होती हैं, हलके–फुलके मजाकिया संवाद होते हैं जो चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते चलते हैं। म्यूजिकल कॉमदी का प्रचलन ब्रिटेन और अमेरिका में खूब हुआ है। कॉमदी को पाँच रूपों में बांटा गया है –

1. शास्त्रीय कॉमदी – में रूढ़िगत आदर्शों एवं प्रथाओं का पालन और नैतिक मूल्यों को विशेष महत्त्व दिया जाता है।

2. रूमानी कॉमदी – में रूढ़ियों की उपेक्षा तथा स्वच्छन्द कल्पना का उपयोग किया जाता है।

3. भावप्रधान कॉमदी – में किसी एक अन्तर्वृत्ति के असन्तुलन का हास्यास्पद और व्यंग्यात्मक चित्र होते हैं।

4. सामाजिक कॉमदी – में समाज के कृत्रिम व्यक्तित्व का मजाक उड़ाया जाता है।

5. समस्यामूलक कॉमदी – में समसामयिक जीवन के अन्तर्वाह्य रूपों का मनोवैज्ञानिक विवेचन होता है। साथ ही वर्तमान जीवन की मान्यताओं तथा रूढ़िगत आदर्शों की असंगति का पर्दाफास किया जाता है।

मध्यकाल तक आते–आते ईसाई पादरियों ने मनोविनोदपरक नाटकों के समान ही अन्य नाटकों की रचना की जो बाद में मिरेकिल प्लेज (अलौकिक नाटक), मिस्टरीज प्लेज (रहस्यात्मक नाटक) तथा पेशन प्लेज (भावप्रधान नाटक) के रूप में विस्तारित हुए। इसी समय मोरेलिटी प्लेज (नैतिक नाटक) का भी प्रादुर्भाव हुआ। इन सभी नाटकों का प्रयोग पादरी धर्म प्रचार के लिए करते थे। आज के नाटक इन्हीं का विकसित रूप है।

———————————————— ••• ————————————————